बी.ए. द्वितीय वर्ष – हिन्दी साहित्य – 2018–19

प्रथम प्रश्न–पत्र : रीतिकालीन काव्य

समय : 3 घंटे **उत्तीर्णांक : 36** **पूर्णांक –100**

1. **केशव : – रामचंद्रिका** – गणेश वंदना, सरस्वती वंदना, श्रीराम वंदना, अवधपुरी शोभा वर्णन, सीता–स्वयंवर, परशुराम संवाद, वन में राम , भरत कैकेयी संवाद, लक्ष्मण–क्रोध, पंचवटी वर्णन, सिया हरण, अशोक वाटिका में रावण–सीता, सीता के विरह में राम दशा, रावण हनुमान संवाद, लंका दहन, अंगद–रावण संवाद, सीता की अग्नि–परीक्षा , राम राज्य वर्णन।

2. **बिहारी – दोहे** – मेरी भव बाधा हरो, सीस मुकुट कटि काछनी, मोर मुकुट की चन्द्रिकनु, सोहत ओढ़े पीत पट, तजि तीरथ अधर हरि, कीने हु कोटिन, अजौं तर्यौना, तो पर वारौं, बतरस–लालच, नेह न नैनति, केसरि कै सरि, या अनुरागी चित्त, डीठी न परतु, अंग–अंग नग, लिखन बैठि जाकि, दृग उरझत, मानहुं बिधि तन, सघन कुंज छाया, भाल लाल बेंदी, इत आवति चलि , रनित भृंग घंटावली, कहलाने एकत बसत, अरुन सरोरुह कर, ज्यौ व्हैहौं त्यों, करौ कुवत जगु, कब को टेरत , थोरेई गुन रिझते, स्वारथु सुकृत न, करि फलेल को, जिन दिन देखे, कौन भांति रहि, कहत नटत रीझत, नेह न नैननु, नहिं परागु, मंगल बिन्दु सुरंग, दीरघ सांस न लेहु, पत्रा ही तिथि, तो लग या, तन्त्री नाद कवित्त–रस, कनक कनक तै, नर की अरु, मरत प्यास पिंजरा, इहीं आस अटक्यौ रहत, लिखन बैठि जाकी, कंचन तन धन, आवत जात न जानिए, पावस निसि।

3. **देव : छंद –** सुनि के धुनि चातक– मोरनि की, सोवत तें सखी जाग्यो नहीं, सपने में गई देखन हौं सुनि, ता दिन ते अति व्याकुल है तिय, बाल लतान मैं बाल कौ बोल, मोर ही भौन में भावतो आवत, एक तुहीं वृषभानु सुता अरु, सराहैं सुरासुर सिद्ध समाज, आपुस मैं रस मैं रहसैं, सुख सेज के मंदिर तै गुरमंदिर श्री बिधि बानी जु बेद बखानी, जब ते कुंवर कान्ह रावरी कलानिधान , रिझि रिझि रहति रहसि हंसि हंसि उठै, आई बरसाने ते बोलाई वृषभानुसुता, राधिका कान्ह को ध्यान धरै, पावरनि ते पावड़े परे है पुर पौरि लग, सावन मास

सखीन मैं सुन्दरि, मन्दिर तैं निकसी बनि ज्यौ ससि, खोरि लौ खेलन आवतियेन तौ, धार मै धाई धंसी निधार व्है, रावरो रूप रह्यो भरि बैनन, प्रेम कहानिन सो पहिले, आंखिन आंखि लगाये रहैं, सांसन ही सों समीय गयो, एकै अभिलाष लाल–लाख भांति लेखियत, कोऊ कहौ कुलटा, बरूनी बधबंर से गूदरी पलक दोऊ, झहरि झीनी बूंदनि परित मानो।

इकाई – 2

4. पदमाकर –

ऋतु वर्णन – कूलन में, केलिन कछारन में, औरे भांति कुंजन में, चंचला चमाकै, आयी हौ खेलन फाग, सीज ब्रज चंद पै चली, झिलक झकोर रहै, आपही आपपै रूसि रही, आज बरसाने की नबेली अलबेली बधू।

रस निरूपण – ऐसी न देखी सुनी सजनी, ए हो नंदलाल ऐसी।

फुटकर – तीर पर तरनि–तनूजा, गोकुल के कुल को, फहरे निसान दिसानि, सिर कटहिं, एकै गहि भाले, किलकिलकत चंडी, कामद कला–निधान, सूरत के साह कहै, पुच्छन के स्वच्छ, पारावार–पार–लौं।

भक्ति– देव नर किन्नर राम को नाम जपो, भूख लगै तब देत है भोजन, भोग में रोग वियोग संयोग में, या जग जानकी–जीवन, मीठो महा मिसरी तें, जोग जप संन्ध्या, काम बस सूपनखा, गंगा के चरित्र सुखद सुहाई।

5. सेनापति :

श्लेष वर्णन – दीक्षित परसराम, मूढन कौ अगम, दोष सौ मलीन, सारंग धुनि सुनावै, लाह सौ लसति नग, लीने सुधराई संग, सोहति बहुत भांति, प्रीतम तिहारे अनगन, बदन सरोरुह के संग, बानरन राखै तोरि।

श्रृंगार वर्णन – अंजन सुरंग जीते खंजन, हिय हरि लेत हैं, केसरि निकाई मधुर अमोल बोल, हित सौ निरखि हंसे रूप कै रिझावत हौ, रोस करौ तासौ, मालती की माल तेरे, कौहू तुव ध्यान करै, चंद दुति मंद कीने।

ऋतु वर्णन – **ग्रीष्म** – बरखा को तरनि । **वर्षा** – दामिनी–दमक। **शरद** – पावस निकास। **शिशिर** – सिसिर में ससि। **वसंत** – बरन–बरन तरु फूले ।

रामायण वर्णन– सुर तरु सार की, कंज के समान, धाता जाहि गावै, गाई चतुरानन सुनाई, सकल सुरेस, तौर्यो है पिनाक।

6. महाकवि भूषण :

गणेश स्तवन – अकथ अपार भवपंथ के।

राजवंश–वर्णन – राजत है दिनराज, महाबीर ता बंस में, ता कुल में नृपवृंद, सदा दान किखान में , ताते सरजा बिरद भो, भूषन भनि ताके भयौ, दसरथ राजा राम भो, दच्छिन के सब।

शिवा–प्रशस्ति – त्रिभुवन भहिं परसिद्ध, सिवराज साहिसुत सथ्यनित, सीय संग सोभित सुलच्छन, सुंदरता गुरुता प्रभुता भनि तेरौ तेज सरजा, वेद राखे बिदित, इंद्र जिमि जृंभ पर, चढ़त तुरंग चतुरंग, छूटत कमान बान, गरुड को दावा, ऊंचे घोर मंदर के मुंड कटत कहुं रुंड।

छत्रसाल पराक्रम – भुज भुजगेस की वै, राजत अखंड तेज छाजत ।

इकाई –3

7. घनानन्द : कवि–प्रशस्ति – प्रेम सदा अति ऊंचो लहे ।

प्रेम–पीर–वर्णन :– वहै मुसक्यानि, भोर तै सांझ लौ, सोएं न सोयबो, निस–द्यौंस खरी, तब तौ छबि पीवत, रावरे रूप की रीति अनूप, जेतौ घट सोधौं तब व्है सहाय हाय, चोप चाह चावनि, नेह – निधान सुजान समीप, चंद चकोर की चाह करै, हिये मैं जु आरति, दिननि के फेर सो, कौन की सरन जैये घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, जिन आंखिन, पूरने प्रेम को मंत्र, भए अति निठुर, मीत सुजान अनीत करौ जिन पहले अपनाय सुजान तेरे देखिये को, अति सूधो सनेह को, कित को ढरि गौ, औं जो न देखै, इत बांट परी सुधि, अन्तर मैं बासी पै सुनि, बैरी वियोग की हूकनि ।

8. **गिरधर कविराय –**

कुण्डलियां : – पुत्र प्राणते अधिक है, रही न रानी कैकयी, चिन्ता ज्वाल शरीर की, दाड़िम के धोखे गयो, भूलो चातक आईकै, सोना लावन पिव गये, मोती लावन पिव गये, दौलत पाय न कीजिए, गुण के गाहक सहस नर, सांई सब संसार में, पीवै नीर न सरवरौ, नारा कहै नदीन सन , मूसा कहै बिलार सों, कौवा कहे मराल से, प्रीति कीजिये।

बडेन सौं, बड़े बडेन की ऐसि ही, बीती ताहि बिसार दे, सांई नदी समुद्र को, सांई समय न चूकिये, नयन जब परवश भये, बानी मात्र जगत सब, बानी विषय न करि सकै, खल सज्जन दो जगत में, चिदविलास परपंच यह, राम तूही तूही कृष्ण है।

9. रज्जब :

पद :– औधू अकल अनूप अकेला, मन की प्यास प्रचंड न जाई, गुरु प्रसाद अगम गति पावै, संतो मगन भया मन मेरा, आरती तुम ऊपरि तेरी।

साखी :– जन रज्जब गुरु की, माया पानी दूध मन , घटा गुरु आसोज की , सेवक कुंभ कुंभार , घट दीपक बाती पवन, दरपन में सब देखिए, साधू सदनि पधारतै, नान्हौ सौ नान्हें हुए , रज्जब की अरदास यह, सब घटघटा समानि, रज्जब बूंद समंद की, पतिव्रता कै पीव बिन, हरि दरिया में मीन मन, नर निरवैरि होत ही, औगुंण ढाकै और के, शील रहे सुमिरण गहै, अपना पड़ता आप ही, ज्यूं सुन्दरि सर न्हावतौं, निहकामी सेवा करै, रामनांव निजनाव गति।

इकाई – 4

रीतिकालीन काव्य का इतिहास, परिस्थितियां, नामकरण, प्रवृत्तियां , प्रमुख धाराएं एवं प्रमुख कवि।

इकाई – 5

काव्यशास्त्र – काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन (संक्षिप्त परिचय), नायक–नायिका भेद ।

प्रमुख छंद : दोहा, चौपाई, चौपई, कुंडलिया, कवित्त, गीतिका, हरिगीतिका, रोला, उल्लाला, मालिनी, सवैया, द्रुतविलम्बित।

परीक्षकों के लिए निर्देश :–

1. प्रश्न–पत्र तीन खंडों क्रमशः अ, ब, और स में विभक्त होगा।
2. खंड अ में प्रत्येक इकाई से अधिकतम 2 प्रश्न रखते हुए सभी 5 इकाइयों से कुल 10 लघुत्तरात्मक प्रश्न अनिवार्यतः पूछे जाएंगे।
3. खंड ब में प्रथम 3 इकाइयों में से व्याख्या संबंधी कुल 7 व्याख्या प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थी को किन्हीं 5 व्याख्याओं को अनिवार्य रूप से हल करना होगा।
4. खंड स में पांचों इकाइयों में से 4 आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को 2 प्रश्न अनिवार्य रूप से हल करने होंगे।
5. प्रश्न–पत्र वर्तमान में निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार हो।

विस्तृत अंक योजना –

खण्ड	कुल प्रश्न	अनिवार्य प्रश्न	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक	शब्द सीमा	विवरण
अ	10	10	2	20	50	खंड अ में प्रत्येक इकाई से अधिकतम 2 प्रश्न रखते हुए सभी 5 इकाइयों से कुल 10 लघुत्तरात्मक प्रश्न अनिवार्यतः पूछे जाएंगे।
ब	7	5	8	40	200	प्रथम 3 इकाइयों में से 7 व्याख्या संबंधी प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से 5 प्रश्न अनिवार्य रूप से विद्यार्थियों को हल करने होंगे।
स	4	2	20	40	500	5 इकाइयों में से 4 आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएं –जिनमें प्रत्येक इकाई से अधिकतम एक प्रश्न पूछा जाएं।

सहायक ग्रन्थ –

1. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियां – शिवकुमार शर्मा
2. रीति मुक्त स्वच्छन्द काव्य धारा – मनोहरलाल गौड़
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. बहादुर सिंह
4. रीतिकालीन हिन्दी और काव्य – भगवानदास तिवारी
5. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह
6. महाकवि मतिराम – त्रिभुवन सिंह
7. केशव की काव्य कला – कृष्ण शंकर शुक्ल
8. घनानन्द काव्य और आलोचना – किशोरी लाल
9. समीक्षा शास्त्र – दशरथ ओझा